डॉ. बिपिन पाण्डेय

जन्मतिथि- 31.08.1967
जन्मस्थान - सीतापुर (उ प्र)
पिता का नाम- जगन्नाथ प्रसाद पाण्डेय
माता का नाम- कृष्णादेवी पाण्डेय
मोबाइल नम्बर - 9412956529

सूरज कोप प्रचंड है,व्याकुल है संसार।
ऐसा लगता गगन से ,बरस रहे अंगार।।
बरस रहे अंगार ,हुआ है दूभर जीना।
बहता खूब प्रस्वेद,वस्त्र काया पर झीना।
कहीं न मिलता चैन,चुका जाता है धीरज।
टूट रहा बन कहर,धरा पर क्यों ये सूरज।।
****

विस्मित मत होना कभी,देख समय का फेर।
अंधे के भी हाथ में ,लगती दिखी बटेर।।
लगती दिखी बटेर, निराली प्रभु की माया।
दिखे कहीं पर धूप ,कहीं पर फैली छाया।
कर्म, भाग्य, प्रारब्ध,परस्पर रहते गुम्फित।
जो इससे अनजान ,वही होते हैं विस्मित।।
****

दिखा अँगूठा चल दिए,कभी न आए काम।
दुनिया इनको मित्र का , देती कैसे नाम।।
देती कैसे नाम, स्वार्थ में डूबे रहते।
अवसर रहे तलाश, स्वयं को नागर कहते।
कभी न आते काम ,करें बस वादा झूठा।
बनकर मित्र तमाम, दिखाते रहे अँगूठा।।
****

बोलो अंतिम काल में,होगा कैसे काम।
अगर-मगर करते रहे,हुई सुबह से शाम।।
हुई सुबह से शाम, बैठ अब रोना रोते।
समझा नहीं महत्त्व,जिंदगी बीती सोते।
धर्म-तुला पर काम,हमेशा अपने तोलो।
प्यारे प्रभु का नाम,समय जब मिलता बोलो।।
****

अपने पैरों पर खड़े ,होते हैं वे लोग।
नहीं सफलता मानते,जो केवल संयोग।।
जो केवल संयोग,मानकर रचें कथानक।
साक्षी है इतिहास, नहीं वे होते नायक।
वे ही भरें उड़ान, पूर्ण हों उनके सपने।
करते हैं उपयोग,शक्ति का जो भी अपने।।
****

अपने मुँह मिट्ठू मियाँ,जो बनते हैं लोग।
आत्ममुग्धता का उन्हें,होता तगड़ा रोग।।
होता तगड़ा रोग ,सुनाना रोज कहानी।
करना खुद पर गर्व,समझना खुद को ज्ञानी।
जो रहते सामान्य,पूर्ण हों उनके सपने।
करना नहीं घमंड, दूर हो जाते अपने।।
****

जीवन में जब भी कभी,होतीं आँखें चार।
परिवर्तित होने लगे,अनायास व्यवहार।।
अनायास व्यवहार,दिखे करता मनमानी।
करते खूब सिंगार, समझते राजा रानी।
होता है उत्साह,तरसता मिलने को मन।
मिल जाता जब प्रेम,सुहाना लगता जीवन।।
****

होते अच्छे समय में, मित्र हमेशा ढेर।
बुरे वक्त में लोग सब, लेते आँखें फेर।।
लेते आँखें फेर,पकड़ता हाथ न कोई।
यह है सच्ची बात,नहीं है किस्सागोई।
जो रहते हैं साथ,लगाते सुख में गोते।
दें मुश्किल में साथ,मित्र कम ऐसे होते।।
****

कोई भी अंतर नहीं ,दोनों एक समान।
बेटा-बेटी एक-से ,ईश्वर के वरदान।।
ईश्वर के वरदान,जगत ये कहता सारा।
मानें बेटी हेय, पुत्र आँखों का तारा।
बेटी से दुर्व्यवहार, देख मानवता रोई।
सब देते उपदेश, मानता मगर न कोई।।
****

आया कैसा दौर ये, मिटी फिक्र परवाह।
मनमानी सब कर रहे,सुनें न नेक सलाह।।
सुनें न नेक सलाह, मरा आँखों का पानी।
पकड़ी पश्चिम चाल,बहकती दिखी जवानी।
करें प्रदर्शन अंग ,लगाए गले पराया।
ये कैसा उत्थान ,दौर ये कैसा आया।।
****